Class: M.Com IVth Semester
Subject : Managerial Economics
Topic : Production Function
Dr. Hemant Yadav
Date:02/05/2020

एकाधिकार क्या है? अर्थ और परिभाषा

एकाधिकार (Monopoly) क्या है? "Mono" का अर्थ है एक और "Poly" का अर्थ है विक्रेता। इस प्रकार एकाधिकार एक बाजार की स्थिति को संदर्भित करता है जिसमें किसी विशेष उत्पाद का केवल एक विक्रेता होता है। इसका मतलब यह है कि फर्म स्वयं उद्योग है और फर्म के उत्पाद का कोई नजदीकी विकल्प नहीं है। एकाधिकार प्रतिद्वंद्वी कंपनियों की प्रतिक्रिया के बारे में परेशान नहीं है क्योंकि इसमें कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं है।

एकाधिकार शब्द का मतलब क्या है?

एकाधिकार (Monopoly) तब कहा जाता है जब कोई फर्म किसी उत्पाद का एकमात्र निर्माता या विक्रेता होता है जिसके पास कोई विकल्प नहीं होता है। इस परिभाषा में तीन बिंदु ध्यान देने योग्य हैं। यदि एकाधिकार होना है तो सबसे पहले, किसी उत्पाद का एकल निर्माता या विक्रेता होना चाहिए।

यह एकल निर्माता एक व्यक्तिगत मालिक या एकल साझेदारी या एक संयुक्त स्टॉक कंपनी के रूप में हो सकता है। यदि उत्पाद बनाने वाले कई निर्माता हैं, तो पूर्ण प्रतियोगिता या एकाधिकार प्रतियोगिता इस बात पर निर्भर करेगी कि उत्पाद सजातीय है या अंतर।

दूसरी ओर, जब किसी उत्पाद के कुछ निर्माता या विक्रेता होते हैं, तो ऑलिगोपॉली को अस्तित्व में कहा जाता है। यदि एकाधिकार होना है, तो उद्योग में एक फर्म होनी चाहिए। यहां तक कि शाब्दिक एकाधिकार का अर्थ है एक विक्रेता। मोनो 'का अर्थ है एक और' पाली 'का अर्थ है विक्रेता। इस प्रकार एकाधिकार का अर्थ है एक विक्रेता या एक उत्पादक।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

लेकिन यह कहना कि एकाधिकार का मतलब एक विक्रेता या निर्माता पर्याप्त नहीं है। एक दूसरी शर्त जो एक फर्म के लिए एकाधिकार कहलाने के लिए जरूरी है, वह यह है कि उस एकाधिकार फर्म के उत्पाद के लिए कोई करीबी विकल्प बाजार में उपलब्ध नहीं होना चाहिए।

एकाधिकार का अर्थ

एकाधिकार (Monopoly) शब्द दो शब्दों के संयोजन से लिया गया है अर्थात्, "Mono" और "Poly"। मोनो एक एकल और पाली को नियंत्रित करने के लिए संदर्भित करता है। इस तरह, एकाधिकार एक बाजार की स्थिति को संदर्भित करता है जिसमें एक वस्तु का केवल एक विक्रेता होता है।

इसमें उत्पादित वस्तु के लिए कोई करीबी विकल्प नहीं हैं और प्रवेश के लिए बाधाएं हैं। एकल निर्माता एक व्यक्तिगत मालिक या एकल साझेदारी या एक संयुक्त स्टॉक कंपनी के रूप में हो सकता है। दूसरे शब्दों में, एकाधिकार के तहत, फर्म और उद्योग के बीच कोई अंतर नहीं है।

एकाधिकार का वस्तु की आपूर्ति पर पूर्ण नियंत्रण होता है। कमोडिटी की आपूर्ति पर नियंत्रण रखने के बाद उसके पास मूल्य निर्धारित करने के लिए बाजार की शक्ति होती है। इस प्रकार, एक एकल विक्रेता के रूप में, एकाधिकार एक ताज के बिना एक राजा हो सकता है। यदि एकाधिकार होना है, तो एकाधिकार के उत्पाद और किसी अन्य विक्रेता के उत्पाद के बीच मांग की क्रॉस लोच बहुत छोटी होनी चाहिए।

एकाधिकार की परिभाषा

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Bilas के अनुसार;

"शुद्ध एकाधिकार को एक बाजार की स्थिति द्वारा दर्शाया जाता है जिसमें एक उत्पाद का एक विक्रेता होता है जिसके लिए कोई विकल्प नहीं होते हैं; यह एकल विक्रेता अप्रभावित है और अर्थव्यवस्था में बेचे जाने वाले अन्य उत्पादों की कीमतों और आउटपुट को प्रभावित नहीं करता है। "

Koutsoyiannis के अनुसार;

"एकाधिकार एक बाजार की स्थिति है जिसमें एक एकल विक्रेता होता है। इसमें उत्पादित वस्तु का कोई करीबी विकल्प नहीं है, प्रवेश के लिए बाधाएं हैं। "

A. J. Braff के अनुसार;

"शुद्ध एकाधिकार के तहत, बाजार में एक एकल विक्रेता है। एकाधिकारवादी मांग बाजार की मांग है। एकाधिकार एक मूल्य-निर्माता है। शुद्ध एकाधिकार कोई स्थानापन्न स्थिति नहीं बताता है। "

दीर्घकाल में एकाधिकारी बाजार में कीमत-निर्धारण (Price Determination in Long Term):

एकाधिकारी बाजार में उत्पादक का पूर्ति पर पूर्ण नियन्त्रण रहता है । दीर्घकाल उत्पादन की वह लम्बी अवधि है जिसमें एकाधिकारी माँग दशाओं के अनुसार अपनी पूर्ति को पूर्णतः समायोजित कर लेता है । इसी कारण कहा जाता है कि दीर्घकाल में कीमत मुख्य रूप से पूर्ति दशाओं के आधार पर ही निर्धारित होती है । एकाधिकारी अपने लाभ अधिकतमीकरण (Profit Maximisation) के उद्देश्य के कारण बाजार में वस्तु की पूर्ति को इस प्रकार समायोजित करेगा कि उसे प्रत्येक स्थिति में लाभ (Profit) ही प्राप्त हो ।

अल्पकाल में सीमित अवधि के कारण पूर्ति का माँग के अनुसार समायोजन नहीं हो पाता जिसके कारण अल्पकालीन एकाधिकारी बाजार में लाभ, सामान्य लाभ एवं हानि, तीनों स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं किन्तु दीर्घकाल में पूर्ति के समायोजन के कारण एकाधिकारी केवल लाभ ही अर्जित करता है

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

।

दीर्घकाल में बड़े पैमाने के उत्पादन के कारण प्रारम्भ में फर्म तथा उद्योग को आन्तरिक एवं बाहरी बचतें (Internal & External Economies) प्राप्त होती हैं परन्तु एक बिन्दु के बाद ये बचतें हानियाँ (Diseconomies) में बदल जाती हैं ।

जब फर्म तथा उद्योग को आन्तरिक एवं बाहरी बचतें प्राप्त होती हैं तो उत्पादन में पैमाने के बढ़ते प्रतिफल का नियम (Law of Increasing Returns to Scale) लागू होता है अर्थात् उत्पादन का आकार बढ़ने पर सीमान्त लागत क्रमशः घटती जाती है ।

जैसे-जैसे उत्पादन के आकार में वृद्धि होती जाती है और सीमान्त लागत घटती है वैसे-वैसे औसत लागत भी घटती है किन्तु औसत लागत के घटने की दर सीमान्त लागत के घटने की दर से कम होती है ।

इसी प्रक्रिया में उत्पादन मात्रा और अधिक बढ़ने पर हमें एक ऐसा आदर्श बिन्दु प्राप्त होता है जहाँ सीमान्त लागत और औसत लागत परस्पर बराबर हों । इसे हम पैमाने के स्थिर प्रतिफल (Constant Returns to Scale) का नियम कहते हैं ।

इस आदर्श बिन्दु के बाद आन्तरिक तथा बाहरी बचतें हानियों (Diseconomies) में बदल जाती हैं और पैमाने के घटते प्रतिफल का नियम (Law of Decreasing Returns to Scale) लागू हो जाता है । ऐसी दशा में सीमान्त लागत बढ़ती है, फलस्वरूप औसत लागत भी बढ़ती है परन्तु औसत लागत की तुलना में सीमान्त लागत अधिक तीव्र गति से बढ़ती है ।

दीर्घकाल में एकाधिकारी को तीनों ही दशाओं-बढ़ते प्रतिफल, स्थिर प्रतिफल एवं घटते प्रतिफल, में लाभ प्राप्त होता है ।

(i) बढ़ते प्रतिफल दशा (अथवा घटती लागत दशा) में एकाधिकारी सन्तुलन:

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

(ii) स्थिर प्रतिफल दशा (अथवा स्थिर लागत दशा) में एकाधिकारी सन्तुलन:

(iii) घटते प्रतिफल दशा (अथवा बढ़ती लागत दशा) में एकाधिकारी सन्तुलन:

इस प्रकार दीर्घकाल में एकाधिकारी को सभी प्रकार की लागत दशाओं में लाभ होता है ।

एकाधिकार में अल्पकाल में कीमत-निर्धारण (Price Determination in Short Term):

अल्पकाल में एकाधिकारी लाभ (Profit), सामान्य लाभ (Normal Profit) तथा हानि (Loss) तीनों स्थितियों में उत्पादन कार्य करता है । यह एक गलत धारणा है कि एकाधिकारी सदैव अल्पकाल में लाभ ही अर्जित करता है । एकाधिकारी अल्पकाल में लाभ, सामान्य लाभ या हानि किस स्थिति में काम करेगा यह बाजार के माँग वक्र और बाजार की लागत दशाओं पर निर्भर करता है ।

हम अल्पकाल में एकाधिकारी हानि की सम्भावना से इन्कार नहीं कर सकते । एकाधिकारी के लिए अल्पकाल में हानि की स्थिति कोई असम्भव अवस्था नहीं है ।

संक्षेप में, एकाधिकार में अल्पकाल की सभी सम्भावित दशाओं को निम्नांकित से समझा जा सकता है:

(i) लाभ की दशा (Profit Situation):

(ii) सामान्य लाभ की दशा (Situation of Normal Profit):

(iii) हानि की दशा (Situation of Loss):

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner